REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 6 | MARCH - 2021

झेलम के युध्ध का इतिहास : जो छिपाया गया है वो

रथवी दिपककुमार एन.
पी.एच.डी. छात्र , एच.एन.जी. युनिवर्सिटी,पाटन.

भारतीय वित्तमंत्रालय से जुडे अर्थशास्त्री संजीव सान्याल ने भारतीय इतिहास पर पुनर्विचार करने की बात की है। क्योंकि भारतीय इतिहास में अधिकांश विरुपण ब्रिटिशरो के द्वारा किया गया है और भारत की आज़ादी के बाद कम्युनिष्टो बामपंथी बौद्धिक वर्ग जो हमेशा से, भारतीय राष्ट्रवाद के प्रति शत्रुतापूर्ण रहे है, उन्होंने ब्रिटिशरो की बचीकुची कसर पुरी कर दी।

स्वामी विवेकानंद ने भी एक सदी पहले भारतीय इतिहास के विरुपण और गलत बयानो पर चिंता व्यक्त की थी की जो विदेशी केवल हमारे पतन की बात करते है, जो हमारे शिष्टाचार और रीति-रिवाजो या धर्म और दर्शन को बहुत कम समझते है, वे भारत का वफादार और निष्पक्ष इतिहास कैसे लिख सकते है ? और स्वामीजी की चिंता सही साबित हुई, इन विदेशीयों ने भारतीय इतिहास को विकृत करने की एक कार्यसूचि बनाली थी। और इसके तहत उन्होने भारत के इतिहास को विकृत करने में कोई कसर नहीं छोडी।

हिटलर का प्रचार मंत्री गोबल्स कहता था की झुठ अगर सो बार बोला जाय तो वो सच हो जाता है। एसे ही इन विदेशीयों ने भारत को गरिमा को ठेस पहुंचाने और यहाँ के लोगो को उनसे उतरता दिखाने के लिए भारत के इतिहास में कई सारे झुठ फलाये। जैसे की उन्होने भारत को विदेशी आक्रांताओ के द्वारा विजित देश बताया। आर्यो का बाहर से आया हुआ बताया, भारत के लोगो को कृषि का ज्ञान नहि था, कृषि करना उन्हे बाहर को लोगो ने सिखाया। एसी अनेको झुठी बाते भारत के इतिहास आज सच मानी जाती है और विद्यालयो में ये पाढाया जाता है। इसके विपरित जो भारत के इतिहास की गौरवप्रद बाते है उसे छिपाया गया। जैसे पृथ्वीराज चौहान को ११९२ के तराईन के प्रथम युध्ध में मोहम्मद घौरी के सामने पराजित बताया गया पर ११९१ के तराईन के प्रथम युध्ध में पृथ्वी राज ने उसी घौरी को हराकर जीवनदान दिया था, उस बात पर इतना प्रकाश नहीं डाला जाता। वही घौरी ११७८ में आबु के युध्ध में गुजरात की चालुक्य रानी नायिकादेवी से पराजीत होकर भागा तो कई साल तक भारत पर आक्रमण करने की बात तक भुल गया था। एसी गौरवप्रद बात हमारे इतिहास के परिच्छेद की एक पंक्ति बनकर रह गया। औरंगझेब का कुशासन बहुत विस्तार से वर्णित किया जाता है, पर शिवाजी महाराज के साम्राज्य के लिए इतिहास में पर्याप्त स्थान नहीं है। एसे इतिहास से गौरवशाली राष्ट्रबोध नही प्राप्त होता।

बंकिमचन्द्र चेटर्जी लिखते है कि 'इतिहास से हमे ज्ञान होता है की पराधिनता के परिणाम में पराधिन जाति की बौध्धिक रचनाशीलता समाप्त हो जाती है। पर भारत को आजाद हुए आज ७४ साल हो गए है। समय आ गया है की भारतीय इतिहास में चल रही उन विकृतियों को बाहर कीया जाय और भारत का इतिहास भारतीय दृष्टिकोण से लीखा जाय। प्रसिध्ध इतिहासविद् डॉ.बालमुकुन्द पांडे एक उदाहरण देकर समझाते है की अगर विदेशी हमारा इतिहास लीखेंगे तो वे अपनी समज के अनुसार हमारे पालक माता-पिता को 'स्टेप फादर' और 'स्टेप मदर' समझेंगे और लीखेंगे। यह इतिहास हमारी आनेवाली पीढ़ीयाँ पढ़ेगी तो कहेगी की भगवान कृष्ण के

स्टेपफादर और स्टेपमदर थी। और भारत में महाभारत काल में स्टेपफादर रखने की परम्परा थी। सोचिए कितनी विकृत हो जाएगी हमारी गौरवपूर्ण संस्कृति। इसीलिए भारत का इतिहास भारतीय दृष्टिकोण से पुनः लीखने की आवश्यक्ता है।

आज एक ऐसे राजा की बात करनी है, जिसका साहस अप्रतिम था और उसका शौर्य अदभूत, जिसने भारतभूमि से खदेडा था उसे जिसे दुनिया एलेकजेंडर दी ग्रेट के नाम से जानती है। इन विदेशी और उनका अनुकरण करने वाले इतिहासकारों की वजह से उसे भारतीय इतिहास में वो गौरव प्राप्त नही हुआ जीसका वो अधिकारी था। और एसे एतिहासकारो के चलते भारतीय इतिहास का वो महानायक आज इतिहास की किताब के एक पृष्ट के एक परिच्छेद की एक पंक्ति बनकर रह गया।

इसीलिए आज भी हम अपनी किताबो में पढते है 'विश्व का सबसे महान योध्धा न भूतो न भविष्यति। जब सिकन्दर जीसे युनानी सिकन्दर दी ग्रेट कहकर संबोधित करते है। अपने दिग्विजयी अभियान पर निकला था, तब बडे बडे साम्राज्य उसके सामने नतमस्तक हो गये। जिन्होने उससे युध्ध किया वो अपनी सेना समेत मारे गए। आखिरकार सिकन्दर अपना अभियान लेकर भारतभूमि की और बढा। यहां झेलम का युध्ध हुआ और सिकन्दर जीत गया। इसके पश्चात सिकन्दर का हृदय परिवर्तन हुआ और वो और भी महान हो गया।

एसा इतिहास जो सदियो पहले युनानी इतिहासकारो ने अपने शासक को महान दिखाने के लिए लीखा जो बिलकुल ही तर्कसंगत और सत्य नही है। उस इतिहास जो पूर्वग्रह से प्रभावित है उसे हम आज भी सत्य मानकर पढ रहे है, आज भी हम मानते है की झेलम नदी के प्रवाह से सिकन्दर ज्यादा परिचित था पुरु नहीं, आज भी हम मानते है की युध्ध के पश्चात सिकन्दर ने पुरु को माफ कर दीया था। आज भी हम मानते है की सिकन्दर बहुत महान था।

इतिहास तथ्यो पर आधारित है, और ३२६ ई.पु. मे बनी उस घटना के एसे कई तथ्य है जिससे पता लगता है कि उस युद्ध में महाराज पुरु की पराजय नही हुई थी, उस तथ्यो से हम कह सकते है की सिकन्दर भारत से विजयी होकर नही लौटा था। आज उस युध्ध की और उन सारे तथ्यो की बात करनी है की उस युध्ध का परिणाम कुछ और ही था।

युध्ध की चर्चा से पहले युध्ध के उस परिणाम की चर्चा करते है जिसे हम आजतक पढते आये है। युनानी इतिहासकारो के अनुसार सिकन्दर युध्ध तो जीत गया परन्तु वह पुरु की वीरता से अत्यंत प्रभावित हुआ। वह इतना प्रभावित हुआ की उसने पुरु से जीता हुआ राज्य पुनः उसे लौटा दीया। और उसने पुरु को तक्षशिला का राज्य जो आम्भीकुमार का था वो भी दे दिया। पुरु के साथ हुए यध्ध में तक्षशिला का राजा आम्भी सिकन्दर की तरफ से लडा था। यह बात सोचने के योग्य नहि की सिकन्दर जो एक कर आक्रान्ता था वो एकदम इतना दयालु कैसे हो गया ? पुरु की सेना ने युनानी सेना को तहस नहस कर दीया था, तो सिकन्दर ने उसे पुरस्कार क्यों दीया ? यह बात तर्कसंगत तो नही लगती। और आम्भीकुमार का राज्य पुरु को दे देना ईस बात का कोई औचित्य नही लगता। इस बात का मात्र एक ही कारण हो सकता है की युनानी इतिहासकार सदा से मिथ्या बोलते आये है।

सिकन्दर का जीवन परिचय देखे तो सिकन्दर के गुरु महान दार्शनिक अरस्तु थे। उन्होने कहा था की 'सिकन्दर का जन्म विश्व विजेता बनने के लीए हुआ है।' पर विश्व विजेता बनने के सफर में सिकन्दर की पहली चुनौती थी मेसिडोनिया का राजसिंहासन। सिकन्दर ने अपने पिता की मृत्यु के बाद अपने सब सौतेले व चचेरे भाईयो की हत्या कर दी। इतिहासकारो के अनुसार सिकन्दर ने कभी उदारता नही दिखाई। उसने अपने अनेक सहयोगीयो उनको छोटी सूचि सी भूल से रुष्ट होकर तडपा-तडपाकर मारा था। इस सूचि में उसका एक योध्धा बसुस, उसका मित्र फ्लिटोस और पर्मिनियन और एसे अनेक नाम शामिल है। उसने अपने गुरु अरस्तु के भतीजे कलास्थनिज को मारने में कोई संकोच नहि कीया था।

अब झेलम के उस युध्ध पर आते है। सिकन्दर अफघानिस्तान जीतता हुआ सिन्धु नदी तक आ गया था। ये ३२६ ई.पू. का कालखंड था। सिन्धु पार तक्षशिला का राज्य था। जिसका राजा आम्भीकुमार था, और तक्षशिला के निकट झेलम और चिनाब नदियो के बीच में महाराज पुरु का विशाल साम्राज्य फला हुआ था। आम्भीकुमार और महाराज पुरु मे पुराना बैर था, और आम्भीकुमार स्वभाव से लोभी और निष्ठाहीन था, उसने सिकन्दर के साथ हाथ मीला लीया। कीसी भारतीय नरेश के द्वारा अपने देश के प्रति विश्वासघात किये जाने का लिखित इतिहास मे यह पहला उदाहरण है। सिकन्दर ने पुरु के राज्य को आत्मसमर्पण की मांग की, पर पुरु ने यह कहला भेजा कि वह युनानी विजेता के दर्शन रणक्षेत्र मे ही करेगा। सिकन्दर के विरुद्ध पुरु की यह ललकार युध्ध की खुली चुनौती थी।

आम्भी के साथ मीलकर सिकन्दर ने झेलम नदी पार की। महाराज पुरु को सिकन्दर की सेना की गतीविधियो और आम्भीकुमार के विश्वासघात की पुरी जानकारी थी। युनानी इतिहासकारो के अनुसार अगर सिकन्दर झेलम नदि पार नही कर पाता तो पुरु की विजय

निश्चित थी। पर महाराज पुरु ने जानबुझकर शत्रुओ को झेलम पार करने दी। क्योकी पुरु को झेलम के प्रवाह फलाव और संकिर्णता के बारे में सिकन्दर से ज्यादा जानकारी थी। और वे जानते थे की नदी कब पार करने योग्य है। सिकन्दर की सेना ने जो समय नदी पार करने का निश्चित किया था वो बहुत ही मूर्खतापूर्ण था। नदी पार करते समय झेलम में बाढ आ गइ और सिकन्दर की बहुत-सी सेना नदी में बह गई। झेलम के तट पर प्रकृतिजन्य झंझावात समाप्त हो गया तथा मानवजन्य झंझावात शेष था। बची सेना लेकर सिकन्दर पुरु के राज्य में पहोंचा तो महाराज पुरु अपने विशाल गजराज पर बैठे उसकी प्रतीक्षा में रणक्षेत्र में खडे थे। महाराज पुरु के सैन्य में गजराजो की एक विशाल सेना थी, जिसे देख मेसेडोनिया के घुडसवार योध्धाओ को आधासाहस वही टूट गया। इसके उपरांत पुरु की सेना में शूलसेना की एक प्रशिक्षित टूकडी थी जो हाथी पर से सात सात फ्ट लंबे भालो को कुशलपूर्वक संधान करने में सक्षम थे। उन योध्धाओ के भाले के एक एक प्रहार से तीन तीन युनानी योध्धा गीरकर मरने लगे, सिकन्दर की सेना के कई वीर हताहत हुए। पर सिकन्दर अपनी हठ पर अडा रहा था। वो अपनी विशिष्ट अंगरक्षक टुकडी को लेकर युध्धक्षेत्र के बीच मे घुस गया। पर भारतीय योध्धा हाथी पर होने के कारण सिकन्दर उनका कुछ बिगाड नही पाया। उस समय राजा पुरु के भाई अमर ने संधान कर एक भाला फका, थोडी चुक हुई और भाला सिकन्दर की जगह उसके घोडे बुकिफाइलस को लगा और घोडा वही मर गया। सिकन्दर वही जमीन पर गीर पडा। विश्व विजेता बनने निकले योध्धा की एसी हालत होगी वो युनानीओने स्वप्न में भी नही सोचा था।

सिकन्दर जमीन पर लौट रहा था तभी महाराज पुरु उसके सामने खडग लेकर खडे थे। युनानीयो को लगता था की उनका महान राजा कुछ ही पल में महाराज पुरु के हाथो वध कर दीया जायेगा। पर महाराज पुरु ने क्षात्रधर्म का पालन करते हुए ऐसा नही किया और निःशस्त्र जमीन पर पडे सिकन्दर को जीवन-दान दे दिया। उतने में सिकन्दर के अंगरक्षक उसको रणक्षेत्र से उठाकर दुर ले गये और युनानी सेना का युध्ध करने का साहस टूट गया और उन्होने वापस युनान जाने का निर्णय किया। यही बात युनानी इतिहासकारो ने तोड-मरोड कर कही है।

ब उन साक्ष्यो को देखते है जिससे यह साबित होता है कि इस युध्ध का विजेता सिकन्दर नहि बल्कि महाराज पुरु थे। युनिवर्सिटी ओफ ह्युस्टन के प्रोफसर फकली होल्ट द्वारा लिखित किताब 'एलेकजेंडर दी ग्रेड एंड दी मिस्ट्री ओफ एलिफट मेडालियस' में एक बात का जिक्र आता है कि झेलम के युध्ध के पश्चात युनानी सैनिको ने एक आनंदोत्सव का आयोजन किया था। इस बात के विपरीत इरान और इसीसस के युध्ध में सिकन्दर ने सरलता स सम्पूर्ण विजय हासिल की थी। पर ये जीत के पश्चात युनानी सेना ने कोई आनंदोत्सव नही मनाया था। इस बात का सीधा सीधा मतलब यह है कि झेलम के युध्ध के पश्चात युनानी सेना के जो सैनिक जिवित थे वो अपने इस नवजीवन से बहुत प्रसन्न थे इसलिए वो उत्सव मना रहे थे।

आगे का साक्ष्य देखते है कि कोई भी भारतीय स्त्रोत हिन्दु, बौद्ध अथवा जैन सिकन्दर के आक्रमण की जानकारी नही देता है। प्राचीन भारत के लेखको ने बहुत सा साहित्य सर्जन किया है, जिसमें कौटिल्य का अर्थशास्त्र भी सामील है, जिसमें उन्होने छोटी से छाटी बात लीखी है, तो उन्होने विश्व के इतने महान योध्धा के बारे में लिखने की तस्दी क्यो नही ली ?

एक और साक्ष्य देखते है कि सिकन्दर ने बंदी बनाये पुरु से पुछा की तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाय ? पुरु ने बताया एक शासक दुसरे शासक के साथ करता है वैसा। इस उत्तर से सिकन्दर इतना प्रभावित हुआ और उसे न केवल उसका राज्य लौटाया अपितु अन्य प्रदेश भी प्रदान किये। प्लुटाफ के अनुसार सिकन्दर ने पुरु का १५ संघराज्य, उनके ५०० नगर व अनेक ग्राम प्रदान किये। अगर पुरु पराजित हुए तो सिकन्दर ने उनका सम्मान क्यों कीया ? उनका राज्य क्यों लौटाया ? ये सिकन्दर के स्वभाव के वीपरीत आचरण था। जो इन्सान छोटी सी गलतीयो के लिये अपने सहयोगीयो को तडपा-तडपाकर मारता है वो पुरु को युध्ध के बदले माफो कैसे दे सकता है ? सोचने वाली बात है।

युनानी लेखको ने युध्ध के वर्णन में यह भी लिखा है कि पुरु की सेना के सैनिक विशाल धनुपयुक्त थे जिन्हे वर्षा के कारण जमीन पर पेर रखकर चलना मुश्किल था, और वो सिकन्दर के तिव्रगामी घोडो के सामने नही टीक सके। अगर इन्सान पैर रखकर नही चल सता तो घोडे उस जमीन पर कैसे तिव्र गति से भागे हागे ?

आगे का साक्ष्य देखते है की झेलम के युध्ध के पश्चात सिकन्दर सेना समेत भारत छोडकर भाग गया था। कर्टियस नामक युनानी लेखक ने लीखा है की सिकन्दर के सैनिको के आगे न बढने का कारण लम्बी थकान, बीमारी व घर जाने की आतुरता थी। क्या ये विश्वविजेता सेना के लक्षण मालुम पडते है ? इसका सीधा मतलब यह है की झेलम के युध्ध के बाद सिकन्दर की आधी सेना खतम हो गई थी और जो बची हुई थी वो पराजय से आहत और निरुत्साह हो गई थी और विद्रोह करने की कगार पर थी।

युनानी लेखक प्लुटाफ लीखता है कि 'भारत मे यदी सिकन्दर का आक्रमण न होता तो बडे बडे नगर नही बनते। तो सिकन्दर के आक्रमण से पहले भारत मे सोला महाजनपद थे वो क्या नगर नही थे ? एसे कई झुठ युनानीओ ने भारतीयो के बारे में फलाये है।

इस सभी बातो का तो एक ही मतलब निकलता है की विश्व विजेता बनने का स्वप्न देख रहा सिकन्दर भारत में पराजित हुआ था। महाराज पुरु ने सिकन्दर की सेना को एसा घाव दिया उनका आगे युध्ध करने का साहस ही टूट गया। पर यह सब होते हुए भी दुःख इस बात का है की पराजित होते हुए भी इतिहास का नायक सिकन्दर बना। महान की उपाधि सिकन्दर का मीली।

युनानी इतिहासकारो ने सिकन्दर को बढाचढाकर महान दिखाया यह बात तो समज में आती है। पर भारतीय इतिहासकारो ने क्यो इस युध्ध के गूढ रहस्यो को जानने की कोशिश नही की ? क्यों उन्होने इस मिथ्या बात को इतिहास बनने दिया ? क्यो उन्होने महाराज पुरु को भारतीय इतिहास में जो गौरव मीलना चाहिये वो नही दिया ? एसे प्रश्न अनेक है।

आशा करते है की अब इतिहास को देखने की हमारी दृष्टि बदलेगी। हम हमारे इतिहास को भारतीय नजरिये से दखेंगे और तभी तो एक बात बडे गौरव से कह सकेंगे की...

'जो जिता वही महाराज पुरु'